ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-12, No.05, December: 2024

गुणात्मक शिक्षा के विकास में शिक्षकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति की भूमिका का अध्ययन

डॉ. वन्दना दुआ (शोध निर्देशक) शिक्षा विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राज.)
अल्का पुनियानी (शोधार्थी) शिक्षा विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राज.)

सारांश–
शिक्षक, शिक्षा प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील अंग होता है। शिक्षक ही शिक्षा की गुणवत्ता में सतत् उन्नयन करते हुए देश एंव समाज कीप्रगति का पथ सुनिश्चित करता है। नेल्सन एल0 बांसिंग के अनुसार –''किसी भी शिक्षा योजना में मै शिक्षक को निर्विवाद केन्द्रीय स्थान देता हूँ।'' शिक्षाकी दृष्टि से देश व समाज में आज कापफी प्रगति देखने को मिलती है। परन्तु गुणवत्ता की कीमत पर अनियोजित विकास एंव अनियन्त्रित प्रसार ही हमारेहाथ लगा है। क्योंकि आज समाज सुधारक, राष्ट्र निर्माता, व मार्ग दर्शक कहा जाने वाला शिक्षक अपने सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक मूल्यों व अपने दायित्वोंको भूलता जा रहा है तथा अपनी व्यावसायिक अभिवृत्ति से विलग होता जा रहा है। यदि हम अपनी शिक्षा प्रणाली में गुणात्मक शिक्षा का समावेशन करनाचाहते है तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक हो और वह अपने कार्यों से संतुष्ट रहे। व्यावसायिकअभिवृत्ति सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनो दृष्टिओं से अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि व्यक्ति की जिस कार्य में रूचि हो उसे करना वो पसन्द करेगा। यदिपरिस्थितियों ने कार्य का संपादन करने को विवश किया तो उसे अनिच्छा से करेगा। जिसके अनेक दुश्परिणाम होंगे। देखा जाये तो शिक्षकों को अपने व्यवसायसे मिलने वाले संतोष पर ही गुणात्मक शिक्षा और शैक्षिक जगत के सुखद भविष्य की कामना की जा सकती है। प्रस्तुत शोध पत्र शिक्षकों की व्यावसायिकअभिवृत्ति को सकारात्मकता के पथ पर ले जाने वाले विभिन्न उपायों पर केन्द्रित होगा। जिससे की गुणात्मक शिक्षा का स्वप्न साकार हो सके।
मुख्य शब्द –व्यावसायिक अभिवृत्ति, गुणात्मक शिक्षा, शिक्षण व्यवसाय

प्रस्तावना–

विद्या नाम नरस्य रुपमधिकं, प्रच्छन्न गुप्तं धनम्। विद्या भोग कारी यशः सुखकारी विद्या गुरुणाः गुरु।।
विद्या बन्धुनों विदेशगमने विद्या पर देवता। विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विहिनः पशु।।

निःसन्देह विद्या अर्थात शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान है। शिक्षा मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास कोआधार स्तम्भ प्रदान कर उसे सशक्त और सार्थक बनाने में प्रभावकारी भूमिका निभा रही है। शिक्षा के ही द्वारा समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है औरसभ्यता के रथ को आगे बढ़ाता है जीवन की उत्कृष्टता शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। समाज में सुख समृद्धिलाने का कार्य भी शिक्षा ही करता है।वर्तमान समय में शिक्षा को एक महत्वपूर्ण अभिकरण के रुप में देखा जाता है। शिक्षा का तात्पर्य मात्र किताबी ज्ञान नही है बल्कि अधिकाधिक अनुभवोंके आधार पर जो व्यावहारिक ज्ञान व्यक्ति को दिया जाता है उसका शिक्षा में सर्वोपरि स्थान है। जीवन में सपफलता का रहस्य वस्तुतः शिक्षा में ही निहितहै अतः वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि गुणात्मक शिक्षा का दामन थामा जाय, इस गुरूतर दायित्व के निर्वहन के लिए शिक्षकों को बेहतर तरीकेसे तैयार होना होगा। कोठारी आयोग (1964-66)से ही यह बात की जाने लगी थी कि शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षकों को बतौर पेशेवर तैयारकरना अत्यन्त जरूरी है। वहीं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा 2005 ने भी शिक्षकों की बदलती भूमिका को भी रेखांकित किया है आज एक शिक्षक केलिए जरूरी है कि वह बच्चों को जाने, समझे, कक्षा में उनके व्यवहार को समझे, उनके सीखने के लिए उपयुक्त माहौल तैयार करें, उनके लिए उपयुक्तसामग्री व गतिविधियों का चुनाव करे। बच्चे की जिज्ञासा को बनाए रखे उन्हें अभिव्यकित का अवसर प्रदान करे व उनके अनुभवों का सम्मान करे। शिक्षकोंकी भूमिका के सम्बन्ध में कहा गया है कि सीखने–सीखाने की परिस्थितियों में उत्साह वर्धक सहयोगी तथा सीखने को सहज बनाने वाले बनें जो विद्यार्थियोंको उनकी प्रतिभावों की खोज में उनकी शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमताओं को पूर्णता तक जानने में, उनमें अपेक्षित सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों व चरित्रके विकास मे तथा जिम्मेदार नागरिकों की भूमिका निभाने मे समर्थ बनाएं। इसमे दो राय नही है कि शिक्षकों भूमिका निर्वाह प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रुप उनकेशिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति पर निर्भर करता है। तभी व्यक्ति व राष्ट्र का विकास सम्भव होगा और यह कार्य शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृति रखने वाला शिक्षक ही सम्पादित कर सकता है।गुणात्मक शिक्षा में शिक्षकों की अभिवृत्ति का अति महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिक्षक का प्रत्येकव्यवहार एवं क्रियाकलाप उसके अभिवृत्ति से नियंत्रित एवं निर्देशित होता है। शिक्षकों की अभिवृत्ति का प्रभाव उनके शिक्षण

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-12, No.05, December: 2024

पर पड़ता है और जिस शिक्षककी जैसी अभिवृत्ति रहेगी उसका शिक्षा के प्रति वैसा ही दृष्टिकोण रहेगा। शिक्षण व्यवसाय एक आदर्श व्यवसाय के रुप में समाज में स्थापित है। अतः इसव्यवसाय में उन्ही लोगों को जाना चाहिए जिनमें इसके प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति हो। रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था – सिखाए वही जो सीखना कभी बन्दना करे।

शिक्षकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति–

विद्या ददाति विनयम्, विनयात ददाति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाश्नोति, धनात्, धर्मम ततः सुखम्।।

विद्या से विनम्रता, विनम्रता से पात्रता, पात्रता से धन प्राप्ति, धन से धर्म पालन एवं जीवन में सुख प्राप्त होता है और जो अमृत रूपी विद्या का पान कराकरजीवन को सार्थकता व अमरत्व प्रदान करता है। वह गुरु या शिक्षक होता है। **जान एडम्स के अनुसार** –शिक्षक मनुष्य का निर्माता है।राष्ट्रीय विकासको तीव्र बनाने के लिए गुणात्मक शिक्षा एक सशक्त माध्यम है। जिसके लिए शिक्षक रुपी मानवीय संसाधन को अपने व्यवसाय के प्रति सकारात्मक होनाअत्यन्त आवश्यक है इसके अभाव में गुणात्मक शिक्षा की कल्पना भी नही की जा सकती है देखा जाए तो अभिवृत्ति एक सामाजिक प्रत्यय एवं मानसिकपहलू है इसका सम्बन्ध सामाजिक पारिस्थितियों मे व्यक्ति के व्यवहार के मानसिक पक्ष से होता है। अभिवृत्तियाँ किसी वस्तु, व्यक्ति, संस्था एवं स्थिति केप्रति व्यक्ति विशेष के विचारों से अवगत कराती है। रेमर्स, रुमेल एवं गेज के अनुसार – ''अभिवृत्तियाँ अनुभवों के द्वारा व्यवस्थित व संवेगात्मक प्रवृत्ति हैजो किसी मनोवैज्ञानिक पदार्थ या वस्तु के प्रति सकारात्मक– नकारात्मक रुप से प्रतिक्रिया करती है।'' व्यावसायिक अभिवृत्ति से आशय व्यक्ति के व्यवसायके प्रति विशेष प्रकार के व्यवहार से है, वर्तमान समय में शिक्षा को एक व्यवसाय के रुप मे स्वीकार किया गया है तथा हमारी शिक्षण संस्थाएं शिक्षण कार्यकरने वाले व्यक्तियों से शिक्षण व्यवसाय के प्रति विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्षित करने की प्रत्याशा रखती है जैसे शिक्षकों की कक्षागत व्यवहार,शिक्षार्थियों के समय व्यवहार, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में लगन, शिक्षण शैली, साथी शिक्षकों से व्यवहार, नवाचारी कदम, सृजनात्मक कार्य, मूल्यांकन पद्धतिमें नवीनता आदि। शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों मे निम्नलिखित गुण परिलक्षित होते हैं–

- जिज्ञासु व ज्ञानवर्द्धक प्रवृत्ति
- अधिगम सुविधा प्रदाता
- अध्यापन से सम्बन्धित क्षेत्रों और पाठ्यवस्तु का सम्यक् ज्ञानी
- आदर्श व अभिप्रेरणा का स्रोत
- नैतिकता, नियम व मूल्यों को मनाने वाला
- सूचना प्रदाता व परामर्शदाता
- नई रितियों का चालक व सामाजिक परिवर्तन का वाहक
- धैर्यवान, संगठनकर्ता, मित्र तथा दार्शनिक
- आत्मलोचन की अभियोग्यता से मण्डित हो

शिक्षकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति से तात्पर्य ऐसी क्रियाओं से है जो भावनात्मक दृष्टि से किये जाते हैं और अपनी पसन्द अथवा ना पसन्द को भी प्रकटकरते हैं। निःसन्देह यदि शिक्षक का अपने व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति नही है तो शिक्षा की गुणवत्ता मे कमी आएगी। लेकिन इसके विपरीत यदि शिक्षकका अपने व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति अत्यधिक है तो शिक्षा की गुणवत्ता मे वृद्धि लाजमी है। व्यावसायिक अभिवृत्ति एक धारणा है जो शिक्षक के स्वंय केसोचने कार्य व अपने व्यवसाय के प्रति व्यवहार करने के तरीके से सम्बन्धित है शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति न केवल कार्य को आसान बनाती हैवरन् अधिक संतुष्टिजन भी बनाती है। शिक्षण एक चुनौतीपूर्ण व्यवसाय है तथा केवल वे शिक्षक राष्ट्र निर्माता के रुप में इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को निभासकते हैं, जो पूर्णतया इसके लिए तैयार है तथा एक अच्छी व्यावसायिक अभिवृत्ति रखते है शिक्षण व्यवसाय एक स्पष्ट व निश्चित लक्ष्य, व्यवसाय के प्रतिप्रेम तथा निश्चित रुप से इस व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति की माँग करता है। और यही माँग शिक्षकों के व्यक्तित्व को प्रभावी बनाता है तथा आत्मविश्वास में वृद्धि करता है। शिक्षकों में सकारात्मक व्यावसायिक अभिवृत्ति होना अति आवश्यक है। ताकि वे पूर्ण मनोयोग से अपनी योग्यता व क्षमताका प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों मे भी सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करने में सक्षम हो सके।

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-12, No.05, December: 2024

शिक्षकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति में बढ़ोत्तरी हेतु प्रशिक्षण संस्थानों को प्रभावशाली प्रशिक्षक, अनुकुल वातावरण, शिक्षण–अधिगम सहायक सामग्री, आई.सी.टी. की पर्याप्त उपलब्धता पर ध्यान देना चाहिए। शिक्षा आयोग(1964-66)ने भी इस बात पर बल देते हुए कहा है कि ''विज्ञान और प्रौद्योगिकीपर आधारित विश्व में जन सामान्य की समृद्धि, कल्याण तथा सुरक्षा शिक्षा द्वारा ही निर्धारित होती है तथा शिक्षा में गुणात्मक विकास के लिए शिक्षकों कीव्यावसायिक शिक्षा का सुदृढ़ कार्यक्रम अनिवार्य है।'' शिक्षकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति शिक्षार्थियों की रचनात्मकता को पंख लगाती है जिससे वे उपलब्धभौतिक व मानवीय संसाधनों का समुचित प्रयोग कर अच्छे परिणाम को प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिशद् (1988)में गुणात्मकअध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम प्रारूप का विकास किया गया। इसमें नवाचारी मॉडल के रुप में इस बात पर बल दिया गया कि शिक्षक, व्यवसाय के प्रति,अर्जित विषय ज्ञान के प्रति और लक्ष्य प्राप्ति के प्रति अपनी भूमिका पर बल दें सकें।इसी सन्दर्भ में शिक्षण व्यवसाय के प्रति सजग शिक्षक के स्वरूप को डॉ. विनीत खेरा (1997) द्वारा इस प्रकार बताया गया है –

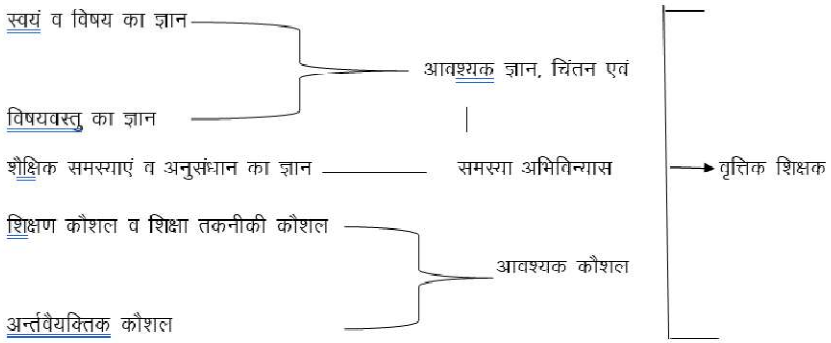

शिक्षकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति और गुणात्मक शिक्षा

गुणात्मक शिक्षा का तात्पर्य ऐसी शिक्षा है जो प्रत्येक बच्चे के काम आए। इसके साथ ही हर बच्चे की क्षमताओं के सम्पूर्ण विकास मे समान रुप सेउपयोगी हो। साधारणतयः गुणात्मक शिक्षा का अर्थ ऐसी शिक्षा से लगाया जाता है जो रटने से दूर ले जाती है। गुणात्मक शिक्षा के लिए और भी प्रचलितशब्द है। जैसे – बाल केन्द्रित शिक्षा, नवाचारी शिक्षा, गतिविधि आधारित शिक्षा, निर्माणवादी अथवा रचनावादी शिक्षा आदि। गुणात्मक शिक्षा की प्रक्रिया मेंसुप्रशिक्षित शिक्षक, जो व्यावसायिक अधिगम तथा विकास से निरन्तर जुड़े रहते हो, विद्यार्थियों के लिए सुविधायुक्त कक्षा कक्ष, कौशल आधारित एवंबालकेन्द्रित शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री, बिना रुकावट के अधिगम हेतु कौशलयुक्त मूल्यांकन तथा उपयोगी आधुनिक तकनीकी आदि को शामिल कियाजाता है। गुणात्मक शिक्षा की यह स्वाभाविक अपेक्षा होती है कि उसमें शिक्षार्थी और शिक्षक दोनों ही ज्ञान की प्रक्रिया के साथ गहराई से जुड़े। इसमें कोईसंशय नही है कि गुणात्मक शिक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व शिक्षक उसके व्यक्तिगत गुण, योग्यता, व्यावसायिक प्रशिक्षण और उसकी अपने शिक्षणव्यवसाय के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है। इस सन्दर्भ में शिक्षा आयोग (1964-66) का कथन है कि– ''हम चाहे कितनी भी अच्छी योजनाओं एवं नीतियोंको क्यों न बना लें। उनकी सपफलता या असपफलता इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक कितने उत्साह से उन्हें कक्षा में क्रियान्वित करते है।'' एक शिक्षकको प्रत्येक विद्यार्थी के साथ इस प्रकार आत्मसात हो जाना चाहिए कि वह विद्यार्थी के नेत्र से ही देखें और उसी के मस्तिष्क से सुनें और यह तभी सम्भवहै जब शिक्षक की व्यावसायिक अभिवृत्ति सकारात्मक होगी। शिक्षा की गुणात्मक उन्नति मूल रुप से शिक्षकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति पर ही निर्भर करतीहै। सकारात्मक व्यावसायिक अभिवृत्ति रखने वाला शिक्षक निम्नलिखित कार्यों द्वारा गुणात्मक शिक्षा को पल्लवित व प्रसारित करने का कार्य करता है।

- कक्षा मे अपने आचरण से शिक्षा प्रदान करते हुए शिक्षार्थियों का ख्याल रखता है तथा उनके साथ आनन्द की अनुभूति करता है।
- शिक्षक उत्साहवर्धक, सहयोगी व मानवीय व्यवहार करते हुए शिक्षार्थियों की सम्भावानाओं के पूर्ण विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है।
- शिक्षक अपनी विषयगत दक्षता अभिवर्द्धित करते हुए शिक्षण की विभिन्न शैलियों व तकनीकों का उपयोग कर शिक्षार्थियों के अनुभव को पोशित करता है।

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-12, No.05, December: 2024

- शिक्षक सीखना किस प्रकार होता है। उसकी मौलिक समझ रखते हुए सीखने हेतु अनुकूल वातावरण का सृजन करता है।
- शिक्षक शिक्षा को अपने व्यक्तिगत अनुभवों की सार्थकता की खोज के रुप मे देखता है तथा ज्ञान निर्माण को मन्नशील अधिगम की लगातार उभरती प्रक्रिया केरुप में स्वीकार करता है।
- शिक्षक निरन्तर ग्रहणशील व अधिगम करते हुए शिक्षार्थियों की भावना, आवश्यकता व सम्मान का ख्याल रखता है।

गुणात्मक शिक्षा की दृष्टि से एक शिक्षक का प्रथम और सबसे बढ़कर दायित्व यह है कि वह शिक्षार्थी की अन्तर्निहित सभी शक्तियों व सामर्थ्यों कापरिपूर्ण विकास करे। वह इस बात के प्रति भी जागृत हो संवेदनशील हो कि अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति वह जिम्मेदार है ईमानदार है और उसे संतोशप्राप्त हो रहा है। शिक्षक हो या शिक्षिका शिक्षण व्यवसाय से मिलने वाले संतोष पर ही सुखद गुणात्मक शिक्षा की कामना की जा सकती है। असंतुष्ट शिक्षकअसंतुष्ट विद्यार्थी को ही जन्म देगें। यह कहना अतिश्योक्ति नही होगा कि शिक्षकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति पर गुणात्मक शिक्षा व विश्व का भविष्य टिकाहै।

निष्कर्ष–

आज के प्रगतिशील युग में प्रत्येक राष्ट्र का भविष्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर ही निर्भर करता है। गुणात्मक शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य को सभ्य सुसंस्कृत एंवयोग्य नागरिक बनाया जा सकता है और इस कार्य का अगर सबसे प्रभावी व पावन माध्यम है जिसके प्रयास से विद्यार्थी अज्ञान एवं अहंकार के तामसिकशक्तियों से संघर्ष कर सकते है। तो वह है शिक्षक। एडम्स का कथन है कि ''एक अच्छा शिक्षक अन्तर्मन को प्रभावित करता है।'' देखा जाये तो शिक्षकसमाज की सर्वाधिक सवेदनशील ईकाई है। विद्यार्थियों में ज्ञानार्जन सुनिश्चित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एक शिक्षक की होती है। निःसन्देह शिक्षकोंकी अभिवृत्ति यदि अपने व्यवसाय से प्रेम करने वाला न हो और यदि वे मानकर चलें की पढ़ाएंगें तब भी पैसा मिलेगा, नही पढ़ाएंगे तब भी पैसा मिलेगातो कौन जायेगा बच्चों पर अपनी मानसिक ऊर्जा खर्च करने, जब शिक्षक ही पढ़ाने में तत्परता नही दिखाते तब बच्चों में पढ़ने के प्रति तत्परता की कल्पनाही नही की जा सकती। एक शिक्षक बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तभी दे सकता है, जब वह स्वयं सतत् अध्ययनरत हो, शिक्षण विधियों में समयानुसार परिवर्तन लाए, रटाने की प्रथा छोड़कर समझाने के प्रति तत्पर हो, नवाचारों का प्रयोग करें प्रश्न पूछने के प्रति बच्चों को प्रेरित करे और यह कार्य एक शिक्षक तभीकर सकते है। जब वह अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखता हो अतः यह कहा जा सकता है कि गुणात्मक शिक्षा के लिए शिक्षकोंकी सकारात्मक व्यावसायिक अभिवृत्ति अनिवार्य है। आज के उभरते हुए भारत में सामाजिक परिवर्तन व वैश्वीकरण की जरुरतों के अनुरूप गुणात्मक शिक्षापर बल देना अनिवार्य सा हो गया है। गुणात्मक शिक्षा का आदान प्रदान पूर्णतः शिक्षकों की व्यावसायिक गुणवत्ता पर निर्भर करता है और यह शिक्षक प्रशिक्षकसंस्थाओं के अभिवृत्ति, दक्षता, उत्साह, प्रतिबद्धता संरचनात्मक ढॉचा, अकादमिक व शोध आधारित व शोध आधारित नवाचारी विचारों व क्रियान्वयन पर निर्भरकरता है। अतः गुणात्मक शिक्षा के प्रसार हेतु शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में भी पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- गौर, बी.पी. एवं शर्मा, आर.के. (2015).*अध्यापक, अध्यापन एवं तकनीकी.* आगराः राखी प्रकाशन प्रा0 लिमिटेड
- भट्टाचार्य, जी.सी. (2012). *अध्यापक शिक्षा.* आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
- मेहता, सी.एस. (1973). *शिक्षक प्रशिक्षण के सिद्धान्त व समस्याएं.* जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
- यादव, एस.एस. (1995). *भारतीय शिक्षा प्रणाली की संरचना एवं समस्याएँ.* लुधियाना : टण्डन पब्लिकेशन्स
- शरतेन्दु, एस.डी. (2014). *अध्यापक शिक्षा.* इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.
- सिंह, एच. (2013). *वर्तमान समाज एवं शिक्षक शिक्षा.* आगराः राखी प्रकाशन.
- हन्पफी, एम.ए. (2014).*अध्यापक शिक्षा.* आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स.

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-12, No.05, December: 2024

- श्रीवास्तव, ए. एवं धाकड़, पी. (2016). *अधिगम एवं शिक्षण.* आगराः राखी प्रकाशन प्रा0 लिमिटेड

Copyright @ 2024 Author